तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

अप्रैल-2020

सप्तगिरि का परिशिष्ट

श्रीराम जयराम जय जय राम!!

ब्रह्मोत्सवों में बालकलाकार...

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सप्तगिरि का परिशिष्ट

अप्रैल-२०२०

वर्ष-०१
अंक-०२

विषयसूची

हिन्दू देवता	जय हनुमान!! श्रीमती टी.त्रिवेणी	04
पन्निद्दराल्वार	भूतत्तू (भूतयोगी) आल्वार श्री कमल किशोर हि तापडिया	06
कन्नड हरिदासवरेण्य	श्रीपादरायलु डॉ.जी.मोहन नायुडु	08
चित्रकथा	'सब्बल से चोट लगी' तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी चित्र - श्री के.द्वारकानाथ	10
बालनीति	एक निर्धन किसान की कहानी (ध्यानमग्नता) श्री सी.सुधाकर रेड्डी	14
विशिष्ट बालक		16
'क्विज'	श्रीमती एन.मनोरमा	17
चित्रलेखन		18

मुखचित्र - श्री कोदंडरामस्वामीजी।

चौथा कवर पृष्ठ - बालांजनेय।

हिन्दू देवता

जय हनुमान!!

- श्रीमती टी.त्रिवेणी

हनुमान जयंती भारत में लोगों के द्वारा हर साल, हिन्दू देवता हनुमानजी के जन्मदिन को मनाने के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। भारतीय हिन्दी कैलेंडर के अनुसार यह त्यौहार हर साल चैत्र (चैत्र पूर्णिमा) माह के शुक्ल पक्ष में १५ वे दिन मनाया जाता है। पहले हम हनुमानजी के आविर्भाव के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे।

हनुमान का आविर्भाव

हनुमानजी का जन्म ज्योतिषियों की गणना के अनुसार चैत्र पूर्णिमा को मंगलवार के दिन चित्ता नक्षत्र व मेष लग्न के योग में हुआ था। हनुमानजी के पिता सुमेरु पर्वत के वानरराज राजा केसरी थे और माता अंजनी थी।

'हनुमान' का नामकरण

इन्द्र के वज्रायुध से हनुमानजी की ठुड्डी (संस्कृत में हनु) टूट गई थी। इसलिए उनको हनुमान का नाम दिया गया। इसके अलावा ये अनेक नामों से प्रसिद्ध है।

हनुमान के विविध नाम

हनुमान को बजरंगबली के रूप में जाना जाता है क्योंकि इनका शरीर एक वज्र की तरह था। वे पवन पुत्र के रूप में जाने जाते हैं। वायु अथवा पवन (हवा के देवता) ने हनुमान को पालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। संस्कृत में 'मारुति' का अर्थ हवा है। 'नंदन' का अर्थ बेटा है। हिन्दू

पौराणिक कथाओं के अनुसार ''मारुति'' अर्थात् ''मारुति-नंदन'' (हवा का बेटा) है। हनुमान अर्जुन के रथ के चिह्न हैं। इसलिए वे कपिध्वज कहलाये।

त्रिभुवन के गुरु भगवान शिव अंजना देवी के कोख में हनुमान रूप से अवतरित हुए तो उनका शिक्षा-गुरु भगवान सूर्य को ही बनना था। हनुमानजी विद्या प्राप्त करने के लिए भगवान सूर्य के पास गए और उनसे ही सारी विद्याएँ प्राप्त हुई।

राम भक्त के रूप में हनुमान

हनुमानजी हिन्दू धर्म में भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त और भारतीय महाकाव्य 'रामायण' में सबसे महत्वपूर्ण पौराणिक चरित्र है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान एक वानर वीर थे। भगवान राम को हनुमान ऋष्यमूक पर्वत के पास मिले थे। हनुमानजी श्रीराम के अनन्य मित्र, सहायक और भक्त सिद्ध हुए। सीतादेवी का अन्वेषण करने के लिए ये लंका गए। श्रीराम के दौत्य का इन्होंने अद्भुत निर्वाह किया। राम-रावण युद्ध में भी इनका पराक्रम प्रसिद्ध हैं। वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड के अनुसार लंका में समुद्र तट पर स्थित एक 'अरिष्ट' नाम पर्वत है, जिस पर चढ़कर हनुमान ने लंका से लौटते समय, समुद्र को कूद कर पार किया था। रामावतार वैष्णव धर्म के विकास के साथ हनुमान का भी दैवीकरण हुआ। वे श्रीराम के पार्षद और पुनःपूज्य देव के रूप में मान्य हो गए। धीरे-धीरे हनुमंत अथवा मारुति पूजा का विधान पाया जाता है। रामभक्तों द्वारा स्नान, ध्यान, भजन-पूजन और सामूहिक पूजा में 'हनुमान चालीसा' और हनुमानजी की आरती के विशेष आयोजन किया जाता है।

भूतत्त् (भूतयोगी) आल्वार

- श्री कमल किशोर हि तापडिया

मल्लीपुरवराधीश माधवी कुसुमोद्भवं।

भूतं नमामियो विष्णोज्ञनिदौपमकल्पयत्।।

श्रीमल्लीपुर नामक सुप्रसिद्ध गाँव में समुद्र तट पर माधवीलता के सर्वश्रेष्ठ पुष्प से श्री भूतयोगी आल्वार का प्राकट्य हुआ। आश्वयुज(तुला) मास के धनिष्ठा नक्षत्र और बुधवार के दिन इनका प्रादुर्भाव हुआ। श्रीमन्नारायण भगवान के कौमुदकी गदा के अवतार माने जाते है। आप पोय्गै (सरोयोगी) आल्वार और पेय (महायोगी) आल्वार के समकालीन है। भगवान खुद भूतल पर पधारकर इनको पंचसंस्कार से सुसंस्कृत किया। भगवान की कृपा से इनका चित्त सदा ही सत्व तत्व से परिपूर्ण रहता था। श्रीमन्नारायण भगवान के श्रीचरणों में इसका मन भ्रमर की तरह लगा रहता था।

आप भगवान श्रीमन्नारायण के ज्ञान दीप को जलाकर उनके अनन्य कृपा पात्र बने। संसार की भोग्यता इनको बिल्कुल ही नहीं छू पायी, इसलिये ये स्वाभाविक रूप से विरक्त होकर संसार में हरिनाम संकीर्तन करते हुए विचरते थे। इन्होने १०० पाशुर के एक दिव्यप्रबन्ध की रचना की। इनके दिव्यप्रबंध को इरन्दान तिरु अंदादि कहते है। इन्होंने १३ दिव्यदेशों का मंगलाशासन किया। श्रीरंगम के श्रीरंगनाथ भगवान, तिरुवेक्का के श्री यथोक्ताकारी भगवान, तिरुवेंकटम के श्री श्रीनिवास भगवान आदि प्रमुख है।

- श्री विश्वक्सेनजी श्री भूतयोगी स्वामीजी के आचार्य हुये।

- वे बचपन से अन्न-पानादि से रहित और कैंकर्य के सुरस को पीने को सदा तत्पर रहकर, शब्दादि विषयों से सदैव अपरिचित रहे।

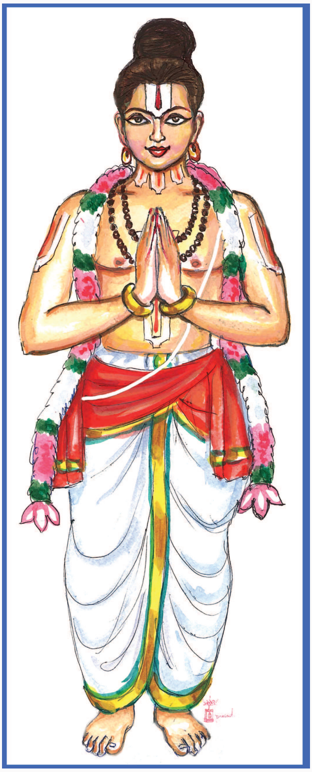

- इन्हें जन्म से ही भगवान के प्रति अत्यंत प्रीति थी। भगवान का परिपूर्ण अनुग्रह उन्हें प्राप्त था और उन्होंने जीवन पर्यंत भगवत अनुभव का आनन्द प्राप्त किया।

- श्री शठकोप स्वामीजी कहते हैं, ''भगवान की महानता/प्रभुत्वता को प्रथम बार सुमधुर तमिल भाषा में इन्होंने ही प्रकाशित किया हैं।''

- श्री वरवरमुनि स्वामीजी उपदेश रत्नमाला में बताते हैं की इन्होंने अपने दिव्य तमिल पाशुरों से इस जगत को प्रकाशित किया।

- पिळ्ळै लोकम् जीयर् बताते हैं की श्रीवैष्णव संप्रदाय में मुदल आल्वारों को उसी प्रकार माना जाता है। जिस प्रकार **प्रणव (ॐ कार)** को आरंभ के रूप में माना जाता है।

- श्री वरवरमुनि स्वामीजी बताते हैं की तुला मास की महत्ता और वैभव श्री भूतयोगी स्वामीजी के अवतार के कारण ही है।

शिक्षा - जीव को अपने कल्याण को प्रशस्त करने के लिए सदा के लिये भगवान श्रीमन्नारायण के युगल चरणारविन्दों का ध्यान करते हुए समय को व्यतीत करना चाहिए। संसार की प्रत्येक वस्तु जो दिखा रही है, अनित्य है, असार है। केवल भगवान ही नित्य है।

कन्नड हरिदासवरेण्य

श्रीपादरायलु

तेलुगु मूल - एस.नागराजाचार्युलु   हिन्दी अनुवाद - डॉ.जी.मोहन नायुडु

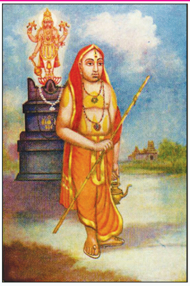

बच्चों! आपने *''बारो मनेगे गोविन्दा...''; ''कंगलिद्द्वातको कावेरिरंगननोडदा जा...''; ''भूषणके भूषण इदु भूषण...''* आदि सुप्रसिद्ध कीर्तन संगीत विभावरी और भजनों में सुना है। इस तरह के प्रसिद्ध गीतों की रचना किसने की है? आप जानते है? इसके बारे में जानना बहुत जरूरी है। जिन्होंने ही उन गीतों की रचना की है, वे है 'श्रीपादरायलु' अथवा 'श्रीपादराजुलु' है। इनका पहला नाम लक्ष्मीनारायण था। इनके पिता का नाम शेषगिरि आचार्युलु और उनकी माता का नाम गिरियम्मा। मैसूर के पास रहने वाला चेन्नपट्टनम ही इनका गाँव है। लक्ष्मीनारायण बचपन में बहुत क्रियाशील था। वे गाय चराते हुए बचपन से ही अपने मधुरकण्ठ से गीत गाते थे। इनके गीतों से प्रकृति भी प्रफुल्लित होती थी। एक बार स्वर्णवर्ण तीर्थ स्वामीजी इस बालक के चमत्कार एवं चेहरे को देखकर इस बालक को अपने शिष्य बनाते हैं। क्रमानुसार इस बालक को उपनयन के बाद स्वामीजी स्वयं संस्कृत, कन्नड, द्रविड़ भाषाओं में निपुण बनाते हुए वेदशास्त्रों का शान प्रदन करते हुए द्वैतमतग्रन्थों का अध्ययन करवाकर बड़े विद्वान बनाते है। इसके बाद बालक की मेधासम्पत्ति को पहचान कर स्वामीजी ने अपने मठ के लिए लायक व्यक्ति समझकर एक शुभ मुहूर्त में सन्यास आश्रम दिलाकर इस बालक का नाम श्रीपादरायलु रखा। उसी दिन से लक्ष्मीनारायण वेदान्तादि ग्रन्थों का अध्ययन एवं प्रवचन करते हुए अपने उपास्य मूर्ति श्रीरंगविठल मूर्ति की पूजा करते थे। पूजा के समय ''श्रीरंगविठल'' अंकित पद से बहुश्राव्य युक्त और राग-तालों से युक्त कीर्तनों का आलापन करते हुए 'कर्णाटक हरिदास साहित्य' के पूर्व बहुत सारे व्यक्ति प्रवर्तक हुए है। फिर भी श्रीपादरायलु ही प्रधान प्रवर्तक के रूप में विख्यात हुए।

श्रीपादरायलु भ्रमरगीत, गोपी गीतों के साथ भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, प्रबंधात्मक, भक्ति, श्रृंगार, आध्यात्मिक रसों के असंख्य कीर्तनों का आलापन करते हुए आगामी संगीतज्ञों के लिए मार्गदर्शक बन गए।

''श्रीमद्वेर नृसिंहराजन्वपते... श्रेयसी'' नामक श्लोक के अनुसार श्रीपादरायलु ने अपनी तपशक्ति से चन्द्रगिरि के राजा सालुव नरसिंहरायलु के ब्रह्महत्या पाप को दूर किया और राजा ने इन्हें बहुत सम्मान किया 'विप्रहत्य दोषबरलु क्षिप्रशंभोदक दिकलेये' नामक गीत इनके द्वारा आलापन किया गया प्रतीत होता है। एक बार श्रीपादरायलु 'कोप्रा' क्षेत्र में 'श्रीमन्यायसुधानुवाद' को गंगा प्रवाह के साथ गंभीर कण्ठ ध्वनि से गाते समय वही पर उपस्थित उत्तर मठ के मठाधीश श्रीरघुनाथ तीर्थजी ने इन्हें 'श्रीपादराजुलु' नाम से पुकार कर इनकी प्रशंसा की। उसी दिन से ये श्रीपादरायलु अथवा श्रीपादराजुलु नाम से विख्यात हुए। श्रीव्यासरायुलु, श्रीवादिराजस्वामीजी, श्रीपुरंदर, कनक, वैकुण्ठादि हरिदासों ने इनके कीर्तन मार्ग को अपनाया। इनके द्वारा रचित अनेक कीर्तनों में 'भूषण के भूषण' बहुत प्रसिद्ध सूक्ति और प्रबोधात्मक है। जिह्वा के लिए नारायण मंत्र, पैरों के लिए तीर्थयात्राएँ, मंदिर के लिए तुलसी बृंदावन, कानों के लिए विष्णु कथाएँ, करकम्बलों (हाथ) के लिए दान, मनुष्य के लिए मान, मुनियों के लिए मौन, आँखों के लिए ईश्वर की मूर्ति, सिर के लिए नमस्कार, कण्ठ के लिए तुलसी मालाएँ बहु सौन्दर्य मानते है।

''हरेवेंकट शैलवल्लभ पोरेयबेकु एन्ना''

श्रीनिवास के ऊपर रचित यह गीत बहुत प्रसिद्ध है। इनका बृंदावन कर्णाटक राज्य के अन्तर्गत कोलार जिले के मुलबागलु नामक शहर में है।

चित्रकथा

'सब्बल से चोट लगी'

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्र - श्री के.द्वारकानाथ

श्री वेंकटेश्वर स्वामी पुष्पप्रिय (फूलों को बहुत पसंद करना) हैं। लेकिन सप्ताचल पर अधिक फूल नहीं मिल रहे हैं। घाटे की आपूर्ति के लिए श्रीरामानुज ने सोच-विचार कर अपने शिष्यवृन्द को बुलाया।

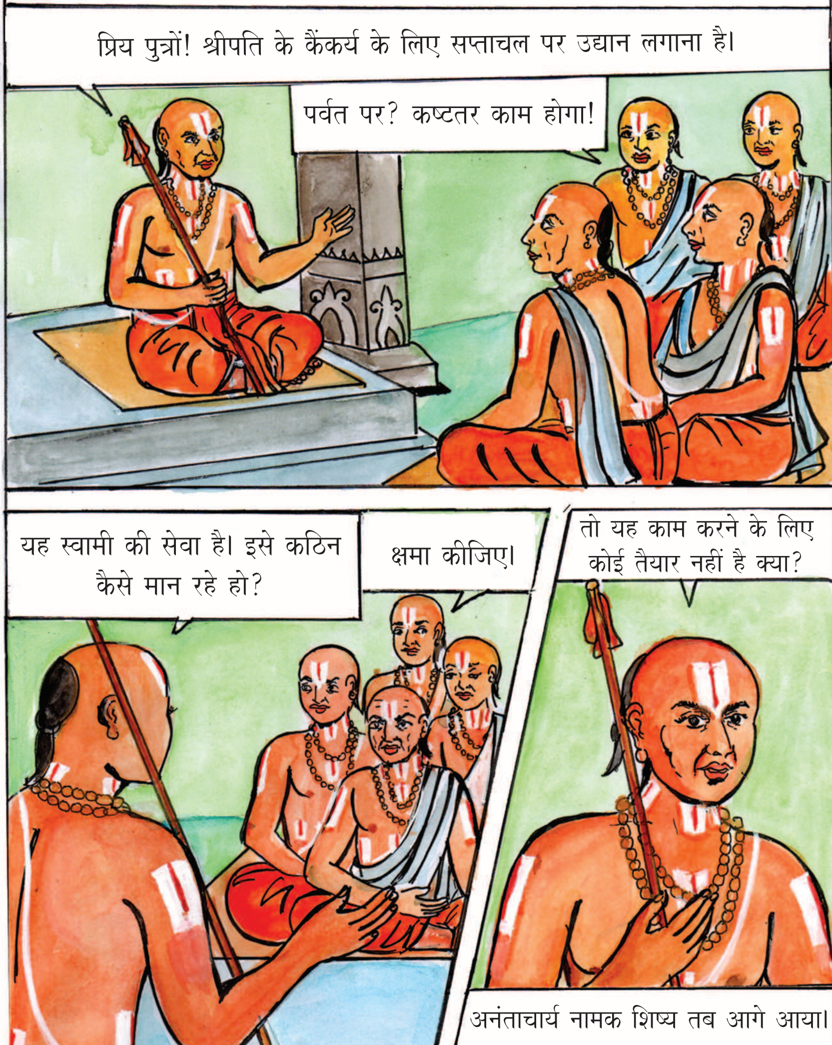

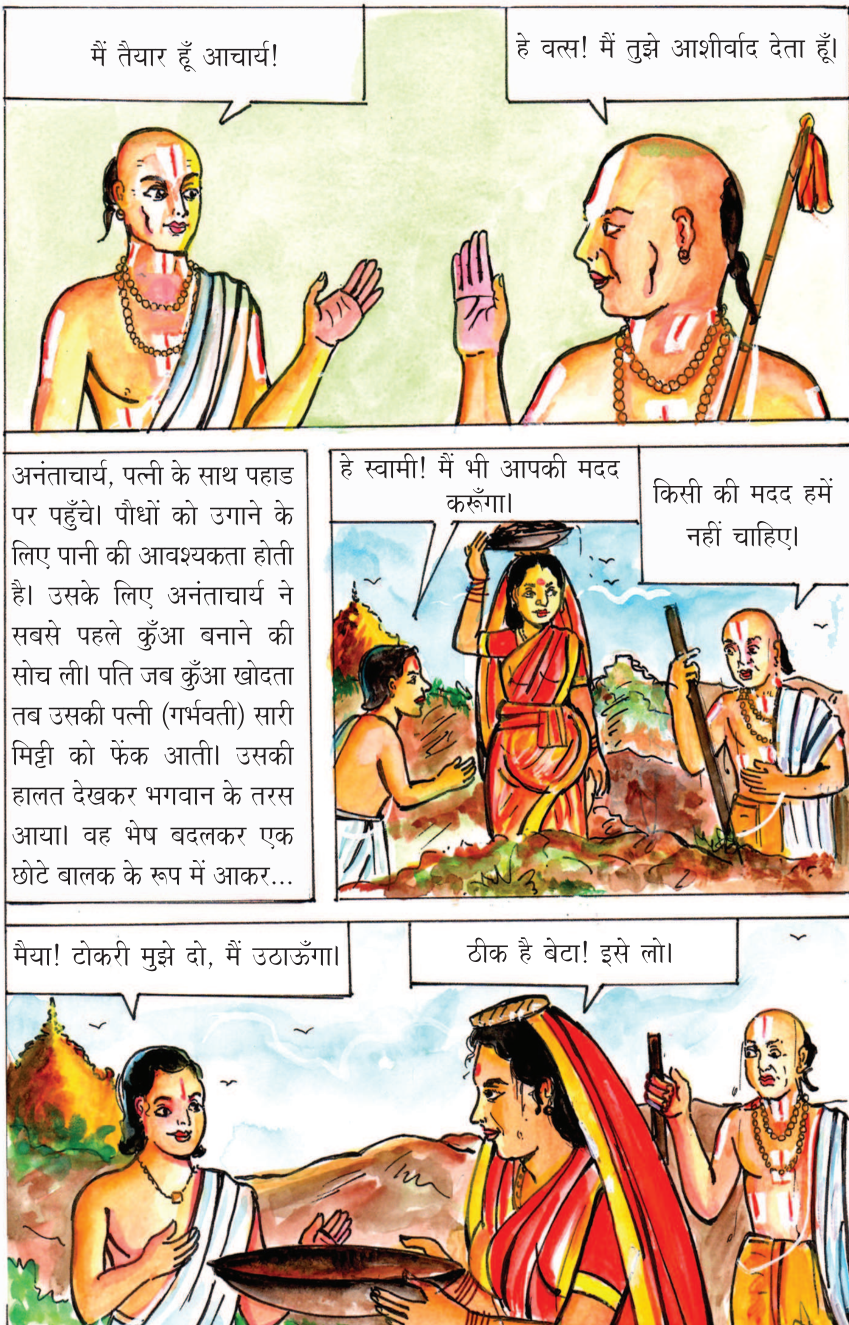
मैं तैयार हूँ आचार्य!
हे वत्स! मैं तुझे आशीर्वाद देता हूँ।
अनंताचार्य, पत्नी के साथ पहाड पर पहुँचे। पौधों को उगाने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। उसके लिए अनंताचार्य ने सबसे पहले कुँआ बनाने की सोच ली। पति जब कुँआ खोदता तब उसकी पत्नी (गर्भवती) सारी मिट्टी को फेंक आती। उसकी हालत देखकर भगवान के तरस आया। वह भेष बदलकर एक छोटे बालक के रूप में आकर...
हे स्वामी! मैं भी आपकी मदद करूँगा।
किसी की मदद हमें नहीं चाहिए।
मैया! टोकरी मुझे दो, मैं उठाऊँगा।
ठीक है बेटा! इसे लो।

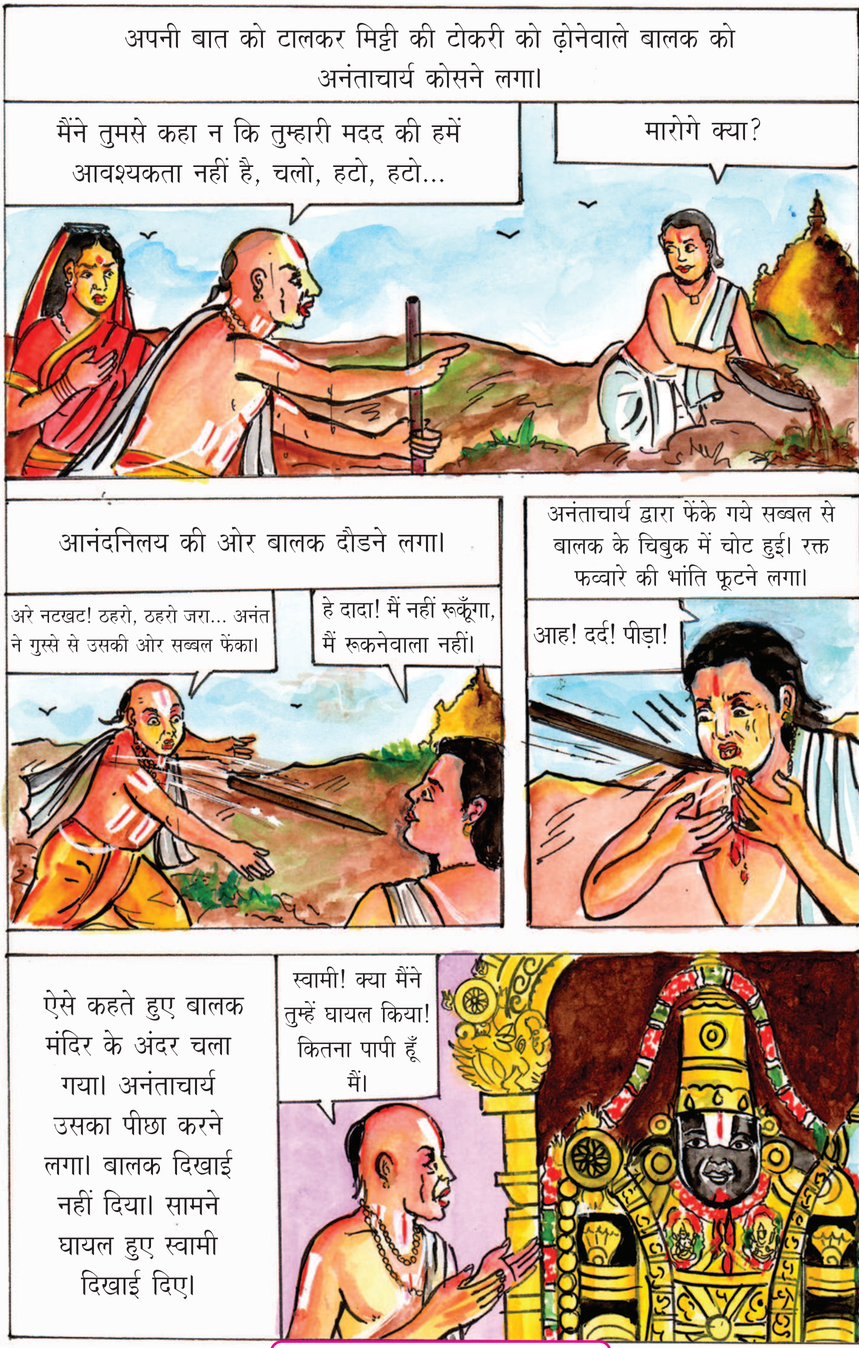

अपनी बात को टालकर मिट्टी की टोकरी को ढ़ोनेवाले बालक को अनंताचार्य कोसने लगा।
मैंने तुमसे कहा न कि तुम्हारी मदद की हमें आवश्यकता नहीं है, चलो, हटो, हटो...
मारोगे क्या?
आनंदनिलय की ओर बालक दौडने लगा।
अरे नटखट! ठहरो, ठहरो जरा... अनंत ने गुस्से से उसकी ओर सब्बल फेंका।
हे दादा! मैं नहीं रूकूँगा, मैं रूकनेवाला नहीं।
अनंताचार्य द्वारा फेंके गये सब्बल से बालक के चिबुक में चोट हुई। रक्त फव्वारे की भांति फूटने लगा।
आह! दर्द! पीड़ा!
ऐसे कहते हुए बालक मंदिर के अंदर चला गया। अनंताचार्य उसका पीछा करने लगा। बालक दिखाई नहीं दिया। सामने घायल हुए स्वामी दिखाई दिए।
स्वामी! क्या मैंने तुम्हें घायल किया! कितना पापी हूँ मैं।

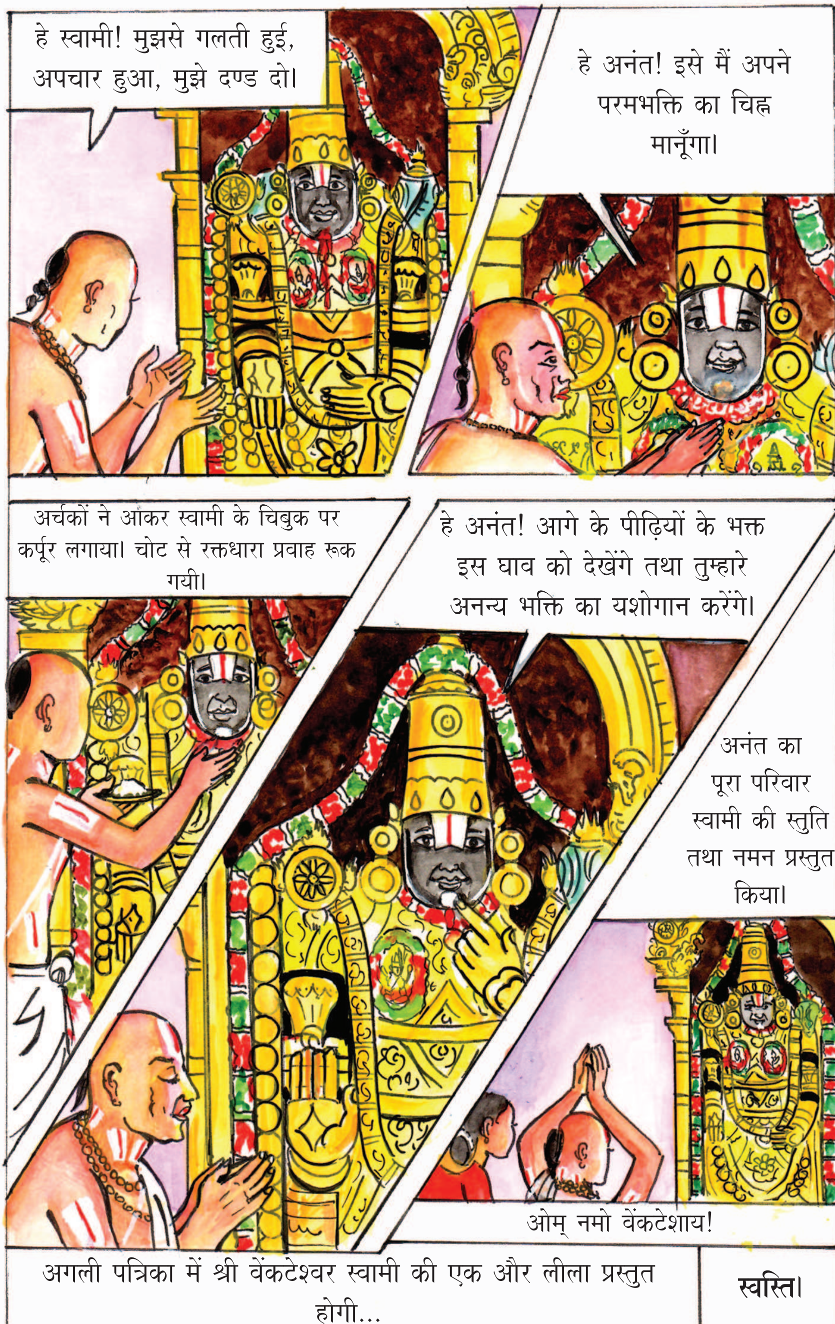

हे स्वामी! मुझसे गलती हुई, अपचार हुआ, मुझे दण्ड दो।
हे अनंत! इसे मैं अपने परमभक्ति का चिह्न मानूँगा।
अर्चकों ने आकर स्वामी के चिबुक पर कर्पूर लगाया। चोट से रक्तधारा प्रवाह रूक गयी।
हे अनंत! आगे के पीढ़ियों के भक्त इस घाव को देखेंगे तथा तुम्हारे अनन्य भक्ति का यशोगान करेंगे।
अनंत का पूरा परिवार स्वामी की स्तुति तथा नमन प्रस्तुत किया।
ओम् नमो वेंकटेशाय!
अगली पत्रिका में श्री वेंकटेश्वर स्वामी की एक और लीला प्रस्तुत होगी...
स्वस्ति।

बालनीति

एक निर्धन किसान की कहानी

(ध्यानमग्नता)

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

रामपुर गाँव में भूपाल नाम का एक किसान रहता था। वह एक कुँआ खोदना चाहता था। सोच आने के तुरंत अपने मन की बात को मित्र विशाल के समक्ष में व्यक्त किया। मित्र ने कहा कि- ''जो काम करना चाहते हो तुरंत करे।'' मित्र की कही बात के अनुसार एक दिन उसने कुँआ खोदना शुरू किया। कुछ फीट तक खुदाई करने पर भी जब उसे पानी नहीं दिखाई दिया तो वह निराश हो गया। फिर उसने दूसरी जगह खुदाई की किंतु पानी कहीं पर भी नहीं निकला। इस तरह ६-७ जगहों पर उसने खुदाई की, लेकिन उसे पानी नसीब नहीं हुआ। फिर वह बहुत दुःखी निराश मन से घर लौट गया।

अगले दिन उसने सारी बात अपने बुजुर्ग मित्र विशाल को बताई। विशाल ने समझाते हुए कहा कि ''तुमने पांच अलग-अलग जगहों पर ८-९ फुट के गड्ढे खोदे फिर भी तुम्हें हाथ नहीं लगा। यदि तुम अलग-अलग जगह पर खुदाई न करके एक ही स्थान पर इतना खोदते, तो तुम्हे कुछ हाथ नहीं मिला। यदि तुम अलग-अलग जगह पर खुदाई न करके एक ही स्थान पर इतना खोदते, तो तुम्हे पानी अवश्य मिल जाता। तुमने धैर्य से काम नहीं लिया और थोड़ा-थोड़ा खोदकर अपना निर्णय बदल लिया। आज तुम ध्यान मग्न होकर एक ही स्थान पर गड्ढा खोदो और जब तक

पानी दिखाई नहीं दे तब तक खोदना जारी रखना। तुम्हें सफलता जरूर मिलेगी।''

बुजुर्ग मित्र विशाल के कहे अनुसार अगले दिन किसान भूपाल ने दृढ निश्चय करते हुए एक बार फिर खुदाई शुरू कर दी। लगभग ३०-३५ फुट की खुदाई हो जाने पर जमीन से पानी निकल आया। यह देखकर किसान बहुत खुश हुआ मन ही मन विशाल का धन्यवाद करने लगा।

सीख : यदि किसी कार्य को लगन एवं ध्यान के साथ किया जाए तो उसमें सफलता जरूर मिलती है।

विशिष्ट बालक

नाम : चि. ई.साईयशस्वि

कक्षा : पाँचवीं कक्षा

जन्म : १८ नवंबर, २००९

पिताजी : श्री ई.वेंकटरमेश, भारतीय सेना

माताजी : श्रीमती डी.श्रीदेवी, ति.ति.दे.

विद्यालय : मेक मैं बेबी जीनियस, तिरुपति

१) वेमन शतक रत्न - तीसरी कक्षा

२) ११८ तत्वों की आवर्त सारणी - चौथी कक्षा

३) १०८ योगासन प्रवीण - चौथी कक्षा

४) १०० गणित की मेज - क्षणिक गणितोत्तमा - चौथी कक्षा

५) १०० के ऊपर ओरिगामी वंडर किड - चौथी कक्षा

६) टान्ग्राम वंडर किड - चौथी कक्षा

७) **जीनियस बुक ऑफ रिकार्डस**

अ) १०० वेमन पद्य - १०० छात्र - २५ मिनट - १ जून, २०१६

आ) १०० वेमन पद्य - २०० छात्र - २५ मिनट - ५ जून, २०१७

इ) १०० वेमन पद्य - ३०० छात्र - २५ मिनट - ३ जून, २०१८

८) **वंडर बुक ऑफ रिकार्डस**

१०० वेमन पद्य - ३०० छात्र - ३ जून, २०१८

i) रूबिक्यूब

ii) जगिकिंग बाल्स

iii) माइक्रो आर्ट

iv) चित्र लेखन

v) स्केटिंग

vi) भगवद्गीता

vii) विष्णुसहस्रनाम

viii) गोविंदनामावली

ix) लिंगाष्टकम्

x) ब्रीत लेस सांग

'क्विज'

आयोजक - श्रीमती एन.मनोरमा

१) प्रभु श्रीराम के पिताजी का नाम क्या है?

अ) धर्मराज　　आ) दशरथ

इ) नंदमहाराज　　ई) सत्राजित्

२) देवताओं के गुरु का नाम क्या है?

अ) बृहस्पति　　आ) सांदीपनी

इ) शुक्राचार्य　　ई) परशुराम

३) भगवान बलराम के माँ का नाम क्या है?

अ) रुक्मिणी　　आ) सावित्रि

इ) राधा　　ई) रोहिणी

४) परमपावन 'त्रिवेणी संगम्' नदी कहाँ उपस्थित है?

अ) इलहाबाद　　आ) तिरुपति

इ) काशी　　ई) श्रीरंगम

५) गणेशजी के वाहन का नाम क्या है?

अ) मयूर　　आ) मूषिक

इ) मगर　　ई) नंदी

६) माँ गंगादेवी को भूलोक में लानेवाला महापुरुष कौन है?

अ) पुलस्य　　आ) मतंग

इ) भगीरथ　　ई) ऋष्यश्रृंग

७) 'नंदक' खड्ग अंश से जन्मित हुए श्री बालाजी के परम भक्त कौन है?

अ) अन्नमय्या　　आ) पुरंदरदास

इ) वेंगमांबा　　ई) तुकाराम

८) रावणासुर की पत्नी का नाम क्या है?

अ) सुभद्रा　　आ) मंडोदरी

इ) कैकेयी　　ई) सीता

जवाब - १) आ　२) अ　३) ई　४) अ　५) आ　६) इ　७) अ　८) आ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

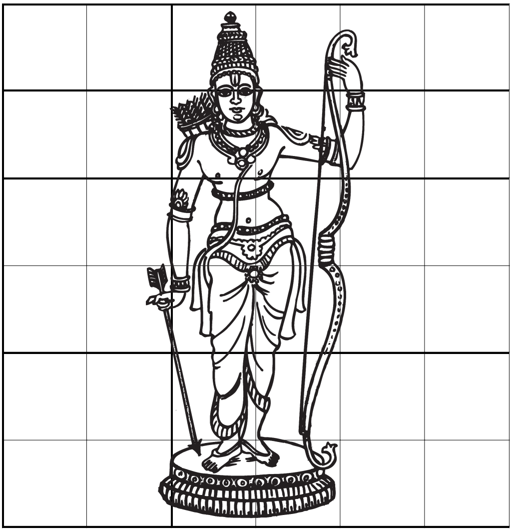

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

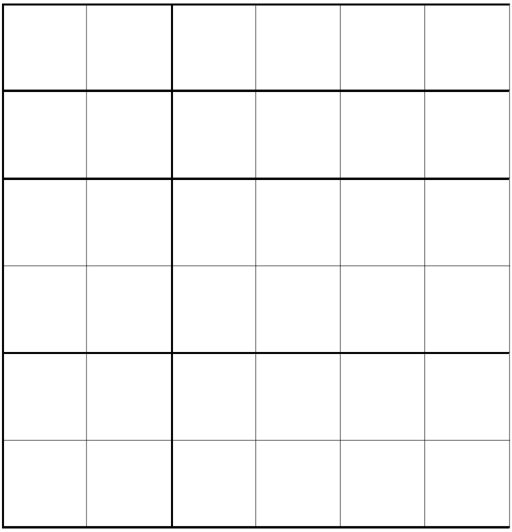

ब्रह्मोत्सवों में बालकलाकार...

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams printing on 25-03-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742. Postal Regd.No.TRP/11- 2018-2020, Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

अंजनीपुत्र हनुमान